

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल में 21 दिवसीय शरदकालीन स्कूल कोर्स का समापन

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल में दिनांक 18 नवम्बर, 2008 से प्रारम्भ हुये निम्न गुणवत्ता के जल व मृदा की जांच एवं प्रबन्धन की नवीन तकनीकियां विषय पर 21 दिवसीय शरदकालीन स्कूल (शरद स्कूल) का आज समापन हुआ । शरदकालीन स्कूल के कोर्स निदेशक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 खजानची लाल, के अनुसार इस शरद स्कूल में देश के 6 प्रान्तों में स्थित कृषि विश्वविद्यालय/भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अन्तर्गत आने वाले कालेजों/संस्थानों के सहायक प्राध्यापक/वैज्ञानिकगणों ने भाग लिया । शरद स्कूल के दौरान विशेष योग्यता प्राप्त वैज्ञानिकों द्वारा विषयक जानकारी के अलावा अन्य विभिन्न विषयों जैसे क्षारीय मृदाओं में फसल उत्पादन के समय विभिन्न तत्वों में रासायनिक परिवर्तन, क्षारीय मृदाओं में जलवायु परिवर्तन का तत्वों एवं पानी के प्रबन्धन पर प्रभाव, क्षारीय मृदाओं की उत्पत्ति एवं संरचना, बहुउद्देशीय खेती प्रणाली (Multi Enterprize) द्वारा क्षारीय मृदाओं से अधिक आय के साथ-साथ मृदा उर्वरता एवं पानी का उचित रख-रखाव, क्षारीय मृदाओं में टिकाऊ खेती आदि विषयों पर विस्तृत व्याख्यान दिये गये । शरद स्कूल से प्रतिभागियों के ज्ञान वर्धन के साथ-साथ, लवण मृदायुक्त प्रान्तों को भी लाभ होने की संभावना बढ़ेगी ।



शरद स्कूल के दौरान, व्याख्यानों के अलावा, क्षारीय एवं लवणग्रस्त क्षेत्र /क्षारीय ग्रस्त पानी के क्षेत्रों तथा उपसतह जलनिकास पध्ति द्वारा लवणयुक्त पानी के सुधार आदि पर किये जा रहे गये शोध क्षेत्रों का भ्रमण भी कराया गया ।



शरद स्कूल का समापन एवं प्रमाण पत्र वितरण संस्थान के निदेशक डा0 गुरबचन सिंह द्वारा किया गया । शरद स्कूल के समापन अभिभाषण में मुख्य अतिथि एवं संस्थान के निदेशक ने किसानों की समस्याओं से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर अधिक ध्यान देने पर जोर दिया । उन्होने कहा कि क्षारीय मृदाओं एवं क्षारीय पानी वाले क्षेत्रों में उचित सुधार तकनीक अपनाने से टिकाऊ फसल उत्पादन में लवण सहनशील धान एवं गेहूँ की प्रजातियों का मुख्य योगदान है । मुख्य अतिथि ने प्रतिभागियों को सलाह दी कि मृदा

एवं जल की जांच एवं प्रबन्धन की नई तकनीकियों के साथ-साथ मृदा में होने वाले रसायनिक परिवर्तनों के उचित प्रबन्धन पर भी ध्यान देना प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि इन मृदाओं से अधिक उत्पादन सम्भव हो सकें । संस्थान के निदेशक डा० गुरबचन सिंह ने इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से आये वैज्ञानिकों/प्राध्यापकों का संस्थान में आने पर स्वागत किया तथा क्षारीय मृदाओं की उत्पत्ति, दशा आदि के साथ-साथ संस्थान द्वारा निकाली गई तकनीकों को अधिक से अधिक अपनाकर इन मृदाओं में टिकाऊ फसल उत्पादन पर प्रकाश डाला । निदेशक ने उम्मीद जताई कि प्रशिक्षण सत्र से प्रतिभागियों को सही फायदा तभी होगा जब की यहां पर बताई गई तकनीकों को अपने-अपने क्षेत्र में लागू करेंगे । उन्होंने कहा कि कृषि सम्बन्धी समस्याओं के समाधान हेतु यह संस्थान हमेशा तत्पर है । हमें खुशी होगी कि संस्थान से सम्बन्धित क्षेत्रीय समस्या हमें बतायें ताकि समाधान तलाशा जा सकें ।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा० आर.एल.मीणा ने मंच संचालन किया तथा मुख्य अतिथि निदेशक, शरद स्कूल के आयोजन में सहयोगियों, प्रैस मीडिया आदि का धन्यवाद किया ।